पद ८

(राग: जोगिया - ताल: धुमाळी)

माणिका येई माणिका येई। प्रियनामा सिच्चदानंद धामा।।धु.।। आत्मा स्वच्छंदे नाचिवसी। जग मायिक भासविसी। करुनी कर्मातें उपनिषदें। अलिप्त तूं बोलिवसी। स्फूर्णवाणीतें प्रेरिवसी। अनिर्वाच्य तूं अससी।।१।। तत्पद ईश्वर तूं क्रीडाया। एकचि बहुधा होसी। आपणां विलोकुनी अति हर्षे। सर्वही आपणचि होसी। प्रवेश करूनियां निजसत्तें। दृश्य जडां चेतिवसी। नामरूपाते दावुनियां। स्वस्वरूप लोपविसी।।२।। विनोद तूझा हा बहुरूपें। भिक्तबळें अवतरसी। देउनि पदसेवा निजसदनीं। आनंदें नांदिवसी। ज्ञानमार्तांडा द्योतिवसी। निर्विकार सुखराशी।।३।।